

रीतिकाल में बिहारी का आलोचनात्मक अध्ययन

राज कमल शर्मा

शोधकर्त्ता

महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी

राजस्थान

सार

काव्य और कवि में सदैव ही कविता पर अभिमान करो,
कविता को पूजो पहले, फिर कविवर का सम्मान करो।

इन पंक्तियों के साथ मैं कविवर बिहारीलाल के काव्य को नमन करता हूँ, ये पंक्तियाँ वर्तमान काल के कवि डा० राधेश्याम 'तपन' द्वारा लिखित उद्धृत की गई हैं।

बिहारी लाल काव्य का रत्न जड़ित वह आभूषण है जो काल के घास से कभी ग्रसित नहीं हो सकता वह मूल्यवान एवं बहुमूल्य है हमेशा हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित करता रहेगा

बिहारी के काव्य का प्रभाव हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के साहित्य पर भी पड़ा है। भक्ति के क्षेत्र में बिहारी के ही तुल्य वर्तमान कवि रामनाथ शर्मा 'रमन' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—3

“तू ही कर्ता, तू ही हर्ता तू ही पालनहार है,
हे प्रभु ! इस सृष्टि का बस एक तू आधार है।”

इसी प्रकार संयोग श्रृंगार का एक उदाहरण दृष्टव्य है—

“ख्याब में जिस रात वोह हमसे हुए थे रू—ब रू,
सर्द मौसम में भी वोह शब ऐसी गरमाई के बस।

उर्दू शायरों पर भी गजल, रुबारियाँ, नज्म आदि में भी बिहारी के काव्य की प्रतिच्छाया दिखलाई पड़ती है। इसी प्रकार मलयायम, तमिल, तेलगु आदि भाषाओं पर भी बिहारी के काव्य का प्रभाव पड़ा। 6

बिहारी बाघाडम्बरों के विरोधी थे इन्होंने कबीर की भांति इनका विरोध किया। प्रकृति के रूपों का वर्णन बड़ा सटीक किया है बिहारी के काव्य की यह विशेषता है कि उन्होंने बड़े ही सुन्दर ढंग से इसका चित्रण किया है। नायिका भेद में तो उनका कोई सानी नहीं है। उन्होंने श्रृंगार के एक—एक मोती को ऐसे पिरोया है कि वे सुन्दर बहुमूल्य हिन्दी साहित्य के आभूषण बन गये हैं। बिहारी की नायिकाएँ चातुर्यता से युक्त हैं। वे नायक को अपने बस में आकर्षित करने की योग्यता रखती हैं।

नन्दवाना प्रेमवती शर्मा के अनुसार बिहारी की कृति में श्रृंगार भक्ति, नीति का समन्वित स्वरूप देखने को मिलता है। सतसई में इसके साथ ही रस, अलंकार, भाव नायिका, वेद ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, गुण आदि का ध्यान रखकर अति सुन्दर दोहे रचे गये हैं। तथा दोहा छंद में अपने भावों को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। 8

रीतिकाल की अमूल्य निधि सतसई है बिहारी का ओज अन्य रीतिकालीन कवियों पर भारी है, क्योंकि जो स्तर बिहारी का है वह किसी अन्य रीतिकालीन कवि का नहीं है। उनके लौकिक प्रेम में अलौकिका विद्यमान है। बिहारी के

साहित्य में माधुर्यता है। बिहारी का काव्य कभी खत्म न होने वाला समय है उनका काव्य देखकर यही शेर याद आता है—

दिन भर तो चैन मिल ना सका दो घड़ी मुझे,
आई जो रात लोग जलाने को ले चलें।

बिहारी के काव्य का भाव पक्ष एवं कलापक्ष दोनों ही बड़े सुन्दर बन पड़े हैं। संगीत के रेशमी तारों में इनके शब्द माणिक्य मोती की तरह गुंथे हैं। अतः बिहारी का काव्य सभी मानदंडों में उत्कर्ष काव्य है, बिहारी की सतसई लक्षण मूलक ध्वनि के साथ-साथ समस्त शिल्पगत उपदानों की दृष्टि से एक आदर्श काव्य ग्रंथ है जिसमें अलंकार, रस छन्द, विम्ब, ध्वनि, भाषा का मूल्यांकन, भक्ति नीति और श्रृंगार आदि सभी श्रेष्ठता के साथ व्यक्त हुए हैं। 3

मुख्य शब्द — श्रृंगारिक कवि बिहारी, कल्पना शक्ति, सूक्ष्म भाव, नीति, अलौकिका, नायिका—भेद।

रीतिकाल में तीन रूपों में साहित्य सृजन हुआ। रीतिबद्ध काव्य में जसवन्त सिंह, रीतिमुक्त काव्य में घनानन्द एवं रीतिसिद्ध काव्य में बिहारी लाल आते हैं। जिसमें से महाकवि बिहारीलाल को जितनी प्रसिद्धी प्राप्त हुई उतनी रीतिकाल में किसी अन्य कवि को प्रसिद्धी प्राप्त नहीं हुई। वह एक श्रृंगारिक कवि थे लेकिन उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय काव्यांगों में दिया। उन्होंने यदि नायिका सौंदर्य को कलात्मक रूप प्रदान किया तो यह उनकी प्रतिभा का ही द्योतक है उन्होंने कहा—

सहज सेत पंचतोरिया पहिरत अति छवि होति,
जल चादर के दीप लौं जगमगाति तन—जोति।

इसी के साथ उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा विरही नायिका के जीवित होने का प्रमाण बड़े ही कलात्मक ढंग से किया है—

सुनत पथिक—मुँह माह—निसि चलति लुवैं उहिं गाम,
बिन बूझैं, बिनु ही कहैं जियति बिचारी वाम।

बिहारी ने अपनी नायिका को अत्यन्त चतुर दर्शाते हुए उसका वर्णन बहुत स्वाभाविक ढंग से किया है—

कर मुँदरी की आरसी प्रतिबिंबित प्यौ पाई,
पीठ दियैं निधरक लखै इकटक डीठि लगाइ।

बिहारी ने ब्राह्मण्डम्बरों, जय, छापा, तिलक आदि का कबीर के समान ही विरोध किया है और श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन होने का सन्देश दिया है। नीति सम्बन्धी दोहों में भी बिहारी की सूक्ष्म दृष्टि द्रष्टव्य है—

बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु
भलौ—भलौ कहि छोड़ियें, खोटैं ग्रह जपु दानु।

श्रृंगार वर्णन में बिहारी ने प्रकृति के विविध मनोहारी चित्र अंकित किये हैं। इन्होंने स्वतन्त्र रूप से भी प्रकृति का वर्णन किया है। मुख्यतः इन्होंने प्रकृति का आलम्बन, उददीपन, आलंकारिक और उपदेशात्मक रूप में वर्णन किया है, ऐसे वर्णनों में सरसता सर्वत्र विद्यमान है जैसे—

चुवतु स्वेद मकरन्द कन, तरु तरु तर बिरमाइ,
आवतु दच्छिन देस तैं, थक्यौ बटोही बाइ।

बिहारी ने अपने काव्य में अनेक प्रकार की नायिकाओं का वर्णन किया है जैसे मुग्धा, प्रौढ़ा, कनिष्ठा, नवोढ़ा, स्वकीया, परकीया, स्वाधीनपतिका तथा अभिसारिका आदि। एक सामान्य नायिका के सौंदर्य का वर्णन दृष्टव्य है—

अनियारे दीरघ दृगनु किती न तरुनि समान,
वह चितवनि और कछू जिहिं बस होत सुजान।

बिहारी के काव्य में कल्पना की समाहार शक्ति विद्यमान है। दोहे जैसे छोटे छन्द में अधिक भावों को गूँथने के लिए इस गुण का होना आवश्यक है। संयोग—वियोग के प्रसंगों में बिहारी ने इस गुण का प्रयोग किया है। नायिका का चेतना और विनोदप्रियता में यह गुण देखियें—

रहौ गुही बेनी, लखे गुहिबे के त्योंनार,
लागे नीरे चुचान जे नीठि सुखाए बार।

बिहारी की उक्तियों में वैचित्र्य है। इसके दोहों में सरलता, अनुपम, आकर्षण एवं चमत्कार उत्पन्न करने की विलक्षण शक्ति है। ऐसे स्थलों पर अर्थगाम्भीर्य भी दृष्टिगत होता है यथा—

दृग उरझत दूटत कुटुम जुरत चतुर चित्त प्रीति,
परति गौंठि दुरजन हियै, दर्ई नई यह रीति।

बिहारी ने सूक्तियों के माध्यम से अपने अर्थ में चमत्कार का पुट देने का प्रयास किया है—

ललन सलोने अरु रहे अति सनेह सौं पागि,
तनक कचाई देत दुःख सूरन लौं मुँह लागि।

अलंकारों के प्रयोग में बिहारी दक्ष थे। इन्होंने छोटे—छोटे दोहों में अनेक अलंकारों को भर दिया है। इनके काव्य में श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, अतिशयोक्ति अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है। श्लेष अलंकार का उदाहरण दृष्टव्य है—

अजौ तरयौना ही रहयौ श्रुति सेवत इक रंग,
नाक बास बेसरि लहयौ बसि मुकतनु कै संग।

बिहारी ने मुक्तक काव्य— शैली को स्वीकार किया है, जिसमें समास शैली का अनूठा योगदान है। उनका उक्तिवैचित्र्य चमत्कारिक है—

करौ कुवत जगु कुटिलता तजौ न दीनदयाल,
दुखी होहुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल।

बिहारी सतसई में सभी पद दोहा छन्द में रचित हैं। रीतिकालीन कवि बिहारीलाल अपने ढंग के अद्वितीय कवि हैं। तत्कालीन परिस्थितियों से प्रेरित होकर उन्होंने जिस साहित्य का सृजन किया, वह हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। सौन्दर्य—प्रेम के चित्रण में भक्ति एवं नीति के समन्वय में ज्योतिष, गणित, दर्शन के निरूपण में तथा भाषा के लाक्षणिक एवं मधुर व्यंजक प्रयोग की दृष्टि से बिहारी बेजोड़ हैं। भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से इनका काव्य श्रेष्ठ है।

डा० मफतलाल पटेल ने बिहारी के सौंदर्य बोध को वर्णित करते हुए लिखा है कि नवीन प्रसंगोंद्भावना के साथ बिहारी ने नायिकाओं की विविध मुद्राओं का चित्रोपम शैली में अंकन किया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को भी उन्होंने मुद्राओं एवं चित्रों में बांधा है बिहारी की चित्रवृत्ति नायिकाओं की चेष्टाओं और भावों की अभिव्यक्ति में अधिक रमी है व इन्होंने अनुभावों एवं मुद्राओं के अंकन में जो मौलिकता दिखाई है वह अत्यन्त हृदयग्राही है।

सतसई लिखने की परम्परा प्रचीन काल से ही चली आ रही है बिहारी से पूर्व भी कई कवियों ने संख्यामूलक रचनाओं की रचना की जिनमें से प्राकृत भाषा के महान कवि हाल द्वारा रची गाथा सप्तशती, कवि गोवर्धनाचार्य द्वारा

रचित आर्य सप्तशती कवि अमरूक जी की अमरूकशतक, भूतहरि द्वारा रचित नीतिशतक शृंगार शतक और वैराग्य शतक आदि रचना की गई है। जो कि प्रारंभिक सतसईयों की श्रेणी के अन्तर्गत आती है। 14

संस्कृत सतसईयों के साथ-साथ हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ तुलसीदास और रहीम की सतसईयों से माना जाता है। हिन्दी की सतसईयों के अन्तर्गत कवि तुलसीदास जी द्वारा रचित तुलसी सतसई जिसमें 747 दोहों की रचना की गई। कवि रहीम द्वारा रचित रहीम सतसई मतिराम द्वारा रचित मतिराम सतसई, कवि रस निधि द्वारा रचित रसनिधि सतसई बृन्दद्वारा रचित रसनिधि सतसई वृन्दद्वारा रचित वृन्द सतसई जिसके दोहों की संख्या 705 से 713 तक मानी जाती है। समसतसई जो कि कवि रामसराय जी द्वारा रचित है। बुंदेलखण्ड की चरखारी रियासत के राजा विक्रम सिंह द्वारा रचित विक्रम सतसई, सूर्यमल्ल मिश्र जी द्वारा रचित वीर सतसई अथवा कवि बिहारीलाल द्वारा रचित बिहारी सतसई हिन्दी साहित्य की प्रमुख सतसईयों में गिनी जाती है। बिहारी की सतसई पर पूर्ववर्ती सतसईयों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। बिहारी ने सतसई में दोहा छन्द को महत्व दिया है। इसी के अन्तर्गत उन्होंने अपने हृदय के भावों को प्रकट किया है।

बिहारी की कृति में शृंगार, भाक्ति और नीति का समन्वित रूप देखने को मिलता है। संयोग शृंगार के अन्तर्गत नायक-नायिका के रूप सौंदर्य और उनकी क्रीड़ाओं से सम्बन्धित चित्रण किया गया है। तथा कहीं कहीं उनके प्रेम नैकट्य को व्यक्त किया गया है। संयोग शृंगार के अन्तर्गत बिहारी ने संभोग सुख में आनन्द की प्राप्ति के आलिंगन, चुम्बन, नखक्षत, दन्तक्षत आदि का वर्णन किया है। बिहारी ने जो दन्त क्षत का वर्णन किया है उसका उदाहरण दृष्टव्य है—

**तरिवन-कनकु कपोल दुति बिच बिच ही बिकान,
लाल-लाल चकमति चुनि चौका चीहा संगाना।**

बिहारी ने अपने शृंगार से सम्बन्धित दोहों में मौलिकता दिखाई है उनके दोहों के भाव चाहे पुराने हैं, परन्तु उन्होंने इसमें जो चमक तथा जान डाली है वह नवीनता को धारण किये है जिस प्रकार वाल्मीकि कृत रामायण को इतनी ख्याति प्राप्त नहीं हुई जितनी तुलसीकृत रामचरित मानस को हुई। महर्षि व्यास को इतनी प्रसिद्धी प्राप्त नहीं हुई जितनी सूरदास के श्रीकृष्ण को मिली।¹⁷

संयोग शृंगार के साथ-साथ बिहारी ने वियोग शृंगार का भी सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। व्यथित तीनों ही प्रकार की नायिकाओं प्रवत्स्यपति का, प्रोषित पतिका, आगलपतिका की विरह वेदना का वर्णन बहुत ही सहज ढंग से किया है।

**करी विरह ऐसी, तरु गैल न छाडतु नीचु,
दीनै हूँ चसमा चखनु चाहै लहै न मीचु।**

वियोग के तीनों भेदों का वर्णन के साथ बिहारी ने सतसई के अन्तर्गत विरह की दसों कामदशाओं, अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणाकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि जडता, और मरण का वर्णन किया है। बिहारी ने कई दशाओं के वर्णन में तो सहयता और भावुकता का परिचय दिया है परन्तु अधिकांशतः उनका विरह वर्णन हास्य प्रद प्रतीत होता है क्योंकि उनके विरह संबंधी दोहों में मार्मिकता का अभाव है संवेदना की गहराई तो बिहारी के गिने-चुने दोहों में ही दिखाई देती है। इस प्रकार का एक दृष्टव्य देखिये—

**“ पिय कै ध्यान गही गही रही वही है नारि,
आपु आपु हीं आरसी लखि रीझति रिझवरि।**

शृंगार से श्रान्त पथिक भक्ति की ओर ही दौड़ता है। रीतिकाल में शृंगार प्रधान ग्रंथों की रचना विपुल मात्रा में हुई है, फिर भी यत्र-तत्र भक्ति भावना से पूर्ण रचनायें भी दिखाई पड़ती हैं, यद्यपि भक्तिकाल की भक्ति-भावना और रीतिकालीन भक्ति-भावना में बहुत अंतर दिखाई देता है यह अंतर स्वाभाविकता, गहराई, गहनता की दृष्टि से देखा जा सकता है। रीतिकालीन कवि अपनी रुचि परिवर्तन के लिए शृंगार सागर की डुबकिया लगाते-लगाते भक्ति की ओर उन्मुख हो जाया करते थे। बिहारी का कल भी इस भक्ति धारा से अछूता नहीं रहा है यद्यपि बिहारी ने किसी सम्प्रदाय से विधिवत् दीक्षा ग्रहण नहीं की थी और नहीं वे सूर, तुलसी, मीरा, जायसी आदि भक्तों की तरह पूर्णतः भक्त थे, लेकिन फिर भी भक्ति दर्शन तथा वैराग्य विषयों पर लिखे उनके दोहे उनकी भक्ति भावना का परिचायक हैं। बिहारी ने राधा वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार ही भक्ति की है बिहारी ने इष्ट देव या आराध्य देव श्रीकृष्ण ही हैं

बिहारी ने अपने दोहों के माध्यम से अपने आराध्य के प्रति माधुर्य, सांख्य, और दास्य तीनों प्रकार की भक्ति भावना को प्रकट किया है। 5

बिहारी को लोकपक्ष और लोक अनुभव को काव्य में निबंध लिखने की कुशलता प्राप्त थी। वे एक जागरूक कवि थे। वे अपने आस-पास के सामान्य विषयों तथा अनुभवों को अपने दोहों के रूप में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। बिहारी एक सफल नीति कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं उनका नीति काव्य अनेक विषयों को आत्मसात किये हुए है। नीति सम्बन्धी दोहों में बिहारी का सूक्ष्म निरीक्षण और लोकानुभव स्पष्ट रूप से झलकता हुआ दिखाई देता है—

**आवत जात न जानियतु तेजहिं तजि सियरानु,
घरह जैवाई लौ घट्यों खरौ पूस—दिन मानु।**

नीति का अर्थ व्यापक भाव से होता है। जिसमें जीवन की बहुत सी अनुभूतियाँ आ जाती हैं यही कारण है कि बिहारी के नीतिपरक दोहों में बहुत कूद आ गया है। संगति का दोष, गुणों का आदर, याचक की हीन भावना, खल से भय की नीति, गुणहीन का सम्मान, नीच का स्वभाव, सत्पुरुष की विनम्रता, धन का अहंकार असहृदय एवं गुणग्रहाकता से रहित व्यैतिक आचरण, याचक की हीनभावना, अवसर की पूजा, कृपण का स्वभाव, वैभव से बिगड़ा स्वभाव, बड़ों की मर्यादाहीनता, समय का फेर, अपात्र की प्रतिष्ठा धर्म का संचय, प्रेम की अनन्यता, पद का लोभ, तुच्छ का महत्व अनुपयुक्त व्यक्ति का साथ आदि को अपनी सूक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 10

बिहारी ने अनुभूति पक्ष के अन्तर्गत सौंदर्य विधान को महत्व दिया है। सौंदर्य विधान में उन्होंने नारी सौंदर्य और प्रकृति सौंदर्य को प्रमुखता प्रदान की है। नारी सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि—

**छाले परिबै कै डरनु सखि ना हाथ छुवाई।
झझकत हिये गुलाब के झपैयत झंवा पाई।**

संयोग अनुभूतियों के उददीपन के रूप चित्रण में प्रकृति का सुन्दरी वैश उसकी अनुभूतियों की ओर अधिक आकर्षक बनाता है—

**धाम धारीक निवारिये, कलित ललित अतिपुंज,
जमुना तीर तमाल तरु मिलित, मालती कुंज।**

बिहारी लाल के काव्य के विषय में डा० मफतलाल पटेल ने लिखा है— “ नवीन प्रसंगोद् भावना के साथ बिहारी ने नायिकाओं की विविध मुद्राओं का चित्रोपम शैली में अंकन किया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को भी उन्होंने मुद्राओं एवं चित्रों में बाँधा है। बिहारी की चित्रवृत्ति नायिकाओं की चेष्टाओं और भावों की अभिव्यक्ति में अधिक रमी है व इन्होंने अनुभावों एवं मुद्राओंके अंकन में जो मौलिकता दिखाई है वह अत्यन्त हृदयग्राही है”

डा० रामजी मिश्र की यह टिप्पणी उपयुक्त लगती है—

“धर्म या मंगल रूप नीति की रमणीयता को हृदय से साक्षात्कार कराने वाले रससिद्ध कवि विरले ही होते हैं। इसके लिए जीवन की दार्शनिक एवं आध्यात्मिक गहराई के साथ अत्यन्त उदार तथा विराट स्वरूप के हृदय से साक्षात्कार की आवश्यकता होती है। कवि को उस अनुभूति में, उस जीवन के दर्शन में अपने अहंका तदाकार करना पड़ता है। यह तो उपनिषदों के ऋषियों, वाल्मीकि, कालिदास, तुलसी, कबीर आदि महान आत्माओं के लिए सम्भव है”।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बिहारी का काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है यदि रीतिकाल से बिहारीलाल का काव्य हटा दिया जाये तब रीतिकाल में एक बहुत बड़ी रिक्तता आ जायेगी। उनकी मौलिकता ही उन्हें चरमोत्कर्ष तक पहुँचा देती है। बिहारी ने जिस समास शैली व समाहार शक्ति का परिचय दिया है उसमें उनकी मौलिकता कहनी चाहिए।

सन्दर्भ

1. भगत सैन की वाणी में ईश्वर की सम्कल्पना षब्द सरोकार (जनवरी-मार्च – 2012)
2. हिन्दी के अनचालिक उपन्यास धार्मिक षुप्त से चेतन तक चिन्तन (जुलाई-सितम्बर – 2011)
3. भक्ति काजीन दलित सन्तों में भक्त सैन का संचन हास्य की आवाज (अगस्त – 2012)
4. हिन्दी के अनचालिक उपन्यास और अंधविष्वास की सम्कल्पना, पंजाब सौरभ (नवम्बर – 2012) प्रकण सं० – 05, पृष्ठ सं० (15-20)
5. जनविमर्ष लेखन और पराया देश और बड़ी छोटी कहानियां, षब्द सरोकार (जुलाई-सितम्बर 2013) पृष्ठ –2229-4732, प्रकण सं० – 40, पृष्ठ सं० (22-24)
6. दलित विमर्ष के आगन में जनकथित तथा अन्य कहानियां हिमप्रस्थ (अप्रैल – 2012) प्रकण सं० – 01, पृष्ठ सं० (54-56)
7. साहित्य में हास्य का समाज और आदिवासी विमर्ष, हास्य की आवाज (मार्च-अप्रैल 2013) प्रकण सं० – 03, पृष्ठ सं० (14-17)
8. भक्तिकालीन भक्तों में भक्तसेन का साथन, मूक आवाज (जुलाई-सितम्बर 2013) प्रकण सं० – 03, पृष्ठ सं० (177)
9. हिन्दी उपन्यास समान्ति सरोकार, पंजाब सौरभ (सितम्बर – 2013) प्रकण सं० – 39, पृष्ठ सं० (15-21)
10. पूनम पाहुजा, सेन आर०के० प्याम किरन कौर (2013), महिलाओं का विकास, संघर्ष, प्रकण सं० – 04, पृष्ठ सं० (45-51)
11. सेन आर०के० (2014) हिन्दी के आन्ध्रलिक उपन्यास वान्धिक की पैक्षानिक, स्थिति, हास्य की आवाज प्रकण सं० – 09, पृष्ठ 2277-5331, पृष्ठ सं० (2-6)
12. अनचालिक उपन्यास और लोक संस्कृति, हिमप्रस्थ (मार्च – 2008)
13. अनचालिक उपन्यास और लोक गीत, पंजाब सौरभ (अक्टूबर – 2007)
14. हिन्दी गजल में सार्थक कदम, षब्द सरोकार (जनवरी-मार्च 2008)
15. पहद चोर उपन्यास में अनचालिकता, षब्द सरोकार (अप्रैल-जून 2008)
16. भगत कबीर की भाशा, पंजाब सौरभ (जनवरी-मार्च 2007)
17. अनचालिक उपन्यास और जनजतिया जीवन का यथार्थ (जनवरी-मार्च 2009)
18. अनचालिक उपन्यास और जातिवाद की राजनीति षब्द सरोकार (जुलाई-सितम्बर 2009)
19. हिन्दी उपन्यास और आनचालिकता, षब्द सरोकार (अप्रैल-जून 2007)
20. उपनिषदबद्ध से उत्तर उपनिषदबद्ध की संतति तथा बदलते परिप्रेक्ष्य, रचनाक्रम (अक्टूबर-दिसम्बर 2007)